

अयि श्ण दुर्मद शत्रु वधोदित

दुर्धर निर्जर शक्तिभृते

चन्द्र विचार क्षुरीप महाशित्र

द्वेनकृत प्रमथाधिपते ।



दुरित दुरिष्ट दुराशत्रु दुर्मति

दानवदूत कृतानभते

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि

रामकपर्विनि शैलभृते ॥

रिजुल पेणकर
इयत्ता ८ वी